❖ RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

विदर्भ स्वाभिमान

❖ मुख्य संपादक सुभाषचंद्र जे. दुबे 9423426199

❖ मुख्य प्रबंधक वीणा सुभाषचंद्र दुबे

❖ अमरावती, गुरूवार 5 से 11 सितंबर 2024 ❖वर्ष :15 ❖ अंक- 11 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य - 4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2021-2024 ❖डाक : शुक्रवार-शनिवार

बाबूजी के आदर्श विचार

हम जब सभी की खुशी की सोचते हैं तो हमें खुशी मिलती है. लेकिन जलन, गुस्सा से हमारा चेहरा तक हमारे साथ नहीं होता है. इसलिए खुश रहें, खुश रखें, अलग ही आनंद की प्राप्ती होगी.

ओबीसी को लेकर अब बढ़ेगी राजनीति

चुनाव को लेकर अभी से बिछने लगी हैं बिसातें

विदर्भ स्वाभिमान, 4 सितंबर

अहमदनगर- राज्य में विधानसभा का चुनाव शुरू होने को कुछ महीने बचे हैं, ऐसे में राज्य में ओबीसी की राजनीति फिर एक बार गर्माने वाली है. उसकी शुरूवात महाराष्ट्र सरकार में मंत्री छगन भुजबल ने पिछले दिनों कर दी. उनके मुताबिक ओबीसी के हक के लिए वे अंतिम सांस तक लड़ेंगे. साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि राज्य मंत्रिमंडल से उन्होंने इस्तीफा दे दिया है.

उन्होंने खुलासा किया कि उन्होंने पिछले नवंबर में राज्य मंत्रिमंडल से अपना इस्तीफा दे दिया था. छगन भुजबल वही मंत्री है जिन्होंने अपनी ही सरकार पर पिछले दरवाजे से मराठा समुदाय को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) कोटा में आरक्षण देने का आरोप लगाया है.भुजबल ने यहां एक रैली को संबोधित करते हुए दोहराया कि वह मराठा समुदाय को आरक्षण देने के विरोध में नहीं हैं, लेकिन मौजूदा ओबीसी कोटा साझा करने के खिलाफ हैं. वह अजित पवार-नीत राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के सदस्य हैं.भुजबल ने कहा-विपक्ष के

कई नेता और यहां तक कि मेरी सरकार के नेता भी कहते हैं कि मुझे इस्तीफा दे देना चाहिए. किसी ने कहा कि भुजबल को मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया जाना चाहिए. मैं विपक्ष, सरकार और अपनी पार्टी के नेताओं को बताना चाहता हूं कि 17 नवंबर को अंबाड में आयोजित ओबीसी एल्गार रैली से पहले, मैंने 16 नवंबर को मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था और तत्पश्चात उस कार्यक्रम में भाग लेने गया.भुजबल ने कहा कि वह दो महीने से अधिक समय तक चुप रहे, क्योंकि मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री ने उन्हें इस बारे में नहीं बोलने के लिए कहा था. वरिष्ठ ओबीसी नेता ने कहा-बर्खास्त करने की कोई जरूरत नहीं है. मैंने अपना इस्तीफा दे दिया है. मैं अंत तक ओबीसी के लिए लड़ूंगा.

देश,दुनिया का भविष्य संवारते हैं शिक्षक, अहोभाग्य से मिलते हैं हमें

त्वरित टिप्पणी विदर्भ स्वाभिमान का सभी गुरूजनों के चरणों में वंदन

अमरावती- कहते हैं कि माता-पिता के बाद जिसे आदर्श शिक्षक मिल जाए, वह सबसे बड़ा भाग्यशाली होता है. मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे जीवन में प्राथमिक से लेकर महाविद्यालयी शिक्षा के दौरान आदर्श शिक्षक मिले हैं. जिन्होंने पूरी तरह से समर्पित होकर हर बच्चे को पहचानते हुए उसे मार्गदर्शन किया और जीवन संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. जीवन में शिक्षकों के साथ ही हमें जीवन में जो-जो व्यक्ति सीख देता है, अनुभव देता है, मेरा मानना है कि वह भी शिक्षक से कम नहीं है. ऐसे हजारों शिक्षकों को नमन और वंदन करता हूं. आज शिक्षक दिवस पर सभी के चरणों में नत-मस्तक होकर प्रणाम करता हूं. साथ ही उम्मीद करता हूं कि देश का भविष्य सुधारने वाले शिक्षकों की सभी चाहते पूरी हों और शिक्षा के अलावा अन्य परेशानियों से उबरकर वे पूरी तरह से शिक्षा को ही समर्पित रहें. शिक्षक ना सिर्फ हमें शिक्षा देते हैं बल्कि वह हमेशा हमें अच्छा इंसान बनाने की कोशिश करते रहते हैं. उनकी कही बातें ही हमारे जीवन का निखारती हैं. साथियों इस दिन हमें डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद कर उन्हें नमन करना चाहिए जिनकी जयंती 5 सितंबर के दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता है.अमरावती शिक्षा नगरी है और संस्कृति के साथ पेज 1 से जारी- ही धार्मिक, सर्वधर्म समभाव नगरी के रूप में इसकी सदैव ख्याति रही है. वह बात दीगर है कि कभी-कभी कुछ के स्वार्थ के कारण इसे बट्टा लगाने का प्रयास होता है. मानवता का धर्म सबसे बड़ा धर्म जिस दिन से इंसान मानने लगे **शेष पेज 2 पर**

संपादकीय.....

नतमस्तक हैं हम उन लाखों गुरूजनों के.....

सुधीर महाजन
प्राचार्य,पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल

सर्वप्रथम देश का भाग्य संवारने में सर्वोत्तम योगदान देने वाले गुरूजनों को नमन,वंदन. आदर्श गुरू मिलना किसी के भी जीवन की सबसे बड़ी बात होती है. हम सब भाग्यशाली हैं, जिन्हें जीवन में आदर्श गुरू मिले हैं. कहते हैं कि आदर्श गुरू ही जीवन को संवारने के साथ ही जीवन को खुशी देने, घर,परिवार, समाज तथा राष्ट्र के कल्याण में योगदान देने वाली पीढ़ी का निर्माण करते हैं. उन्हें किसी एक दिन में समेटना संभव ही नहीं है. लेकिन यह भी कम गर्व की बात नहीं है कि आज भी पूरे विश्व में सबसे अधिक सम्मान गुरूजनों को दिया जाता है. हमारे जीवन में भी कई गुरूजनों के कारण ही जीवन संवरा है और उन्हीं की आदर्श शिक्षा को जीवन में आजमाते हुए हजारों छात्रों का भविष्य संवारने की दिशा में प्रयास कर पा रहा हूं. जीवन में शिक्षा का जबर्दस्त महत्व है. हर व्यक्ति के जीवन में वह शिक्षा ही है, जो उसे कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाती है. गुरू आदर्श मिलने पर भविष्य की चिंता की जरूरत ही नहीं रहती है. शिक्षक बच्चों को तब पढ़ाना और आकार देना शुरू करते हैं, जब वो गीली मिट्टी की तरह होते हैं. हर शक्षिक के मन में एक रचनाकार होता है. ऐसा रचनाकार जो शिष्य से समाज, समाज से संस्कृति और संस्कृति से राष्ट्र का निर्माण करता है. यही कारण है कि विश्व के हर देश में शिक्षकों को सबसे अधिक सम्मान दिया जाता है. भारतीय संस्कृति में तो गुरू के स्थान को प्रभु से भी श्रेष्ठ बताया गया है. गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय, बलिहारी गुरू आपने गोविंद दियो बताए. यानी की प्रभु का रास्ता दिखाने वाले भी गुरू ही होते हैं. अपने शिक्षकों को सम्मान देने के लिये विद्यार्थियों द्वारा ये हर वर्ष 5 सितंबर को मनाया जाता है. 5 सितंबर को भारत में शिक्षक दिवस के रूप में घोषित किया गया है. हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को हुआ था इसलिये अध्यापन पेशे के प्रति उनके प्यार और लगाव के कारण उनके जन्मदिन पर पूरे भारत में शिक्षक दिवस मनाया जाता है. उनका शिक्षा में बहुत भरोसा था साथ ही वह अध्येता, राजनयिक, शिक्षक और भारत के राष्ट्रपति के रूप में भी प्रसिद्ध थे.उनके सम्मान में यह दिन देशभर में मनाया जाता है. सही मायने में जिस देश के शिक्षक जितने समर्पित होते हैं, वह देश उतनी ही तरक्की करता है. ऐसे में हमारा मानना है कि शिक्षकों की भावनाओं को समझने के साथ ही उनका उपयोगी पूरी तरह से शिक्षा के क्षेत्र में लेना चाहिए. शिक्षकों को भी चाहिए कि वे देश के भाग्यविधाता के रूप में छात्रों को राष्ट्र प्रेम के साथ ही समर्पण की शिक्षा देते हुए उनका जीवन संवारने का काम करें. शिक्षक दिवस पर सभी गुरूजनों को शुभकामनाएं.

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक, संपादक एस.जे.दुबे ने एस.बी.प्रिंटर्स, गांधी चौक अमरावती से मुद्रित कर छाया कॉलोनी, अकोली रोड, अमरावती 444602 से प्रकाशित किया है. मोबाइल नंबर ***9423426199/9420406706/8855019189.***
विदर्भ स्वाभिमान में प्रकाशित होने वाले विभिन्न लेख, पत्र, साहित्य, लेखकों तथा कवियों के विचारों तथा तथ्यों पर आधारित होते हैं. इन लेखकों के विचारों,तत्थ्यों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है. संपादक पर केवल सम्पादकीय लेखों का ही दायित्व है. **मुख्य प्रबंधक-** सौ. वीणा सुभाषचंद्र दुबे.(सभी विवाद अमरावती जिला न्यायालय अंतर्गत).
RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881
E-Mail-vidarbh. swabhiman@gmail.com
www.vidarbhswabhiman.com

सदा सम्मान करें,भाग्यशाली हैं वे जिन्हें मिलते आदर्श गुरू

समाजसेवी सुदर्शन गांग शिक्षकों को मानते हैं भाग्यविधाता

सुदर्शन गांग
समाजसेवी,शिक्षा प्रेमी

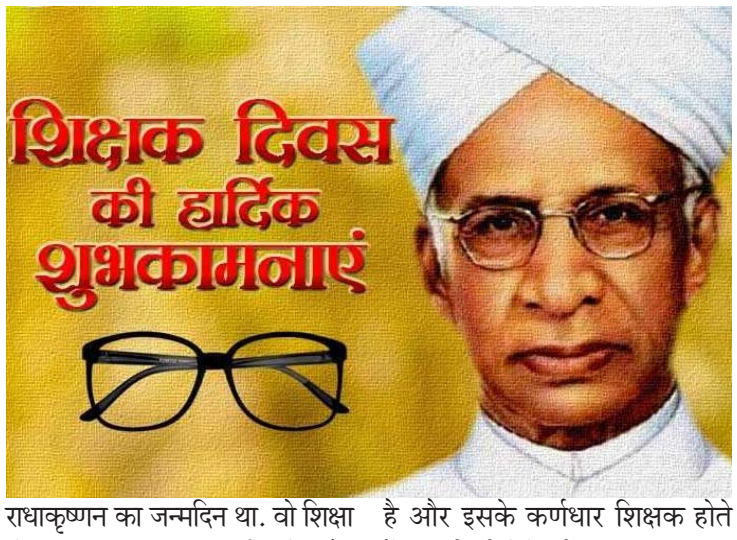

ज़ीवन में गुरूजनों का अत्याधिक महत्व होता है. वे लोग सही मायने में भाग्यशाली होते हैं, जिनके गुरू आदर्श होते हैं और जीवन को तारने और संवारने का काम करते हैं. भारतीय संस्कृति में गुरू के स्थान को भगवान से भी बड़ा इसलिए बताया गया है कि वे बच्चों के जीवन को संवारते हैं. गुरूजनों की महत्ता से शिष्य असंभव को भी संभव कर सकता है. जीवन में हमारे धर्मशास्त्र भी गुरूओं के महत्व से भरे पड़े हैं. गुरूजनों का जीवन सदैव कांटों के ताज जैसे होता है. शिक्षक बच्चों को आकार देता है. जिस देश के गुरू जितने समर्पित होते हैं, उस देश का विकास और प्रगति के साथ ही मानवता की सीख वहां उतनी ही बेहतरीन होती है. गुरूजनों को शिक्षक दिवस पर नमन करने के साथ ही मेरे जीवन को संवारने से लेकर जिन-जिन ने मुझे सदैव सीख दी, अनुभव दिए, ऐसे सभी गुरूजनों को नमन और वंदन.

गुरूजनों के प्रति सम्मान अर्पित करने के साथ ही कृतज्ञता जताने के लिए भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है. इस दिन देश के एक महान व्यक्ति, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन था. वो शिक्षा के प्रति अत्यधिक समर्पित थे और एक अध्येता, राजनयिक, भारत के राष्ट्रपति और खासतौर से एक शिक्षक के रूप में जाने जाते थे. एक बार, 1962 में वह भारत के राष्ट्रपति बने तो कुछ विद्यार्थियों ने 5 सितंबर को उनका जन्मदिन मनाने का निवेदन किया. उन्होंने कहा कि 5 सितंबर को मेरा जन्म दिन मनाने के बजाय क्यों नहीं इस दिन को अध्यापन के प्रति मेरे समर्पण के लिये शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाये. उनके इस कथन के बाद पूरे भारत भर में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा.

दुनिया का सबसे नेक काम

समाजसेवी सुदर्शन गांग कहते हैं कि शिक्षकों का स्थान माता-पिता के समकक्ष होता है. बचपन में दी गई आदर्श शिक्षा ही जीवन को संवारती है और इसके कर्णधार शिक्षक होते हैं. किसी भी पेशे की तुलना अध्यापन से नहीं की जा सकती. ये दुनिया का सबसे नेक कार्य है. डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान शिक्षक थे जिन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष अध्यापन पेशे को दिया है. वो विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षकों के योगदान और भूमिका के लिये प्रसिद्ध थे. इसलिये वो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शिक्षकों के बारे में सोचा और हर वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का अनुरोध किया.उसके बाद से लेकर अभी तक शिक्षक दिवस मनाया जाता है. स्कूलों में विभिन्न कार्यक्रम होते हैं, छात्रों को गुरूजनों के बारे में मार्गदर्शन करने के लिए कहा जाता है. गुरूजनों के चरणों में विनम्र नमन के साथ ही सभी गुरूजन स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों मेंयही कामना.

भविष्य संवारते हैं शिक्षक, अहोभाग्य से मिलते

पेज 1 से जारी-आचरण करने लगे जो धर्म विश्व बंधुत्व तथा शांति को प्रोत्साहित करता है. ऐसा करने से दुनिया की आधी से अधिक समस्या का निराकरण हो जाएगा. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज जिन बातों पर फोकस किया जाना चाहिए, उन बातों पर फोकस नहीं किया जाता है. शिक्षक हमारे समाज के नायक कहना गलत नहीं होगा. लेकिन शिक्षा के बदलते रूप और शिक्षकों पर शिक्षा के अलावा अन्य डाली गई जिम्मेदारियों को देखते हुए यह भी मन व्यथित करता हैं कि शिक्षकों को न्याय के लिए जब सड़क पर उतरना पड़े तो निश्चित ही यह नेतृत्व की विफलता से कम नहीं है.

जीवन में शिक्षक का किरदार बहुत खास होता है, वे किसी के जीवन में उस बैकग्राउंड म्यूज़िक कि तरह होते हैं, जिसकी उपस्थिति मंच पर तो नहीं दिखती, परंतु उसके होने से नाटक में जान आजाती है. ठीक इसी प्रकार हमारे जीवन मे एक शिक्षक की भी भूमिका होती है. चाहें आप जीवन के किसी भी पड़ाव पर हों, शिक्षक की आवश्यकता सबको पड़ती है. भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिन है. वे भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति थे जो इन पदों पर आसीन होने से पहले एक शिक्षक थे. उनकी याद के साथ ही शिक्षकों को सम्मान देने के लिए यह दिन मनाया जाता है. समय के साथ काफी बदलाव शिक्षा क्षेत्र में अहोभाग्य से शिक्षक मिलते हैं. पहले और आज के दौर में काफी बदलाव आया था. पहले शिक्षक पूरी तरह से स्वयं को झों क देते थे. ट्यूशन लगाने के नाम से शिक्षक चिढ़ने का दौर हमने देखा है. हमारे छोटे से गांव धौरहरा में सीनियर बेसिक विद्यालय से मुझ जैसे न जाने कितने बच्चे बने हैं, जिन्होंने आज शिक्षा के सही मायने को समझा है और यही कारण है कि आज भी गांव में जाने के बाद उन शिक्षकों को नमस्कार नहीं बल्कि नतमस्तक होने का जी करता है. पढ़ाते समय कभी घड़ी नहीं देखने, जीवन के पाठ भी पढ़ाने का कार्य शिक्षक करते हैं. आज शिक्षा महंगी हो गई है. किताबी ज्ञान ही बढ़ाने का काम किया जाता है. शिक्षकों की भी अनगिनत समस्याएं हैं, उनका भी दोष नहीं है. आज शिक्षक पर शिक्षा के अलावा इतनी जिम्मेदारियां डाल दी गई हैं कि वह निभाते समय कई बार ऐसा लगता है कि यह शिक्षक नहीं बल्कि सरकारी नौकर है, जिस पर मतदाता पंजीयन से लेकर चुनावी ड्यूटी सहित आधे दर्जन से अधिक जिम्मेदारियों के कारण कई बार वह पढ़ाने के अलावा ही अन्य सभी काम करता है. देश का भविष्य गुरूजनों के हाथों में रहता है, इसको ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को देश की आदर्श पीढ़ी का निर्माण करने की जिम्मेदारी सही तरीके से निभाने का मौका देना चाहिए. सरकार को इस पर चिंतन करना चाहिए ताकि आदर्श पीढ़ी का निर्माण होकर देश आगे बढ़े.

मानवतासेवी भाव रखने वाली डॉ.प्रांजलताई

ज़न्मदिन 11 सितंबर पर विशेष

ज़ीवन में जितना संभव हो खुशियां बांटते रहो, अगर यह भी नहीं हो सकता है तो कम से किसी के आंसू का कारण नहीं बनने का सदैव प्रयास करना चाहिए. आपका जीवन में सदैव अच्छा ही होगा. इसका विश्वास रखो.

ज़ीवन में हम सभी यात्री हैं, हर व्यक्ति का अपना स्टेशन तय है. ऐसे में बेनाम होकर पैदा होने से लेकर हमारे कार्य ही हमारा नाम तय करते हैं और इसे अमर करने का काम करते हैं. जीवन में हमारे कार्यों से ही हमारी आकलन किया जाता है. इसलिए हम पर जो भी जिम्मेदारी ईश्वर ने दी है, उसका सही तरीके से निर्वहन करने का प्रयास करना चाहिए. जब देश का हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी बेहतरीन तरीके से निभाने का प्रयास करेगा तो निश्चीत ही सभी का भला होगा. मानव कल्याण के उद्देश्य को अपने स्तर पर सदैव महत्व देना चाहिए. आत्मीयता, प्रेम, ज्ञान जितना बांटते हैं, उतना ही बढ़कर मिलता है. इसका सदैव ध्यान रखते हुए हमें जीवन में आगे बढ़ना चाहिए. यह कहना है सुख्यात महिला व प्रसूति विशेषज्ञ तथा आदर्श डाक्टर डॉ. प्रांजल राजेश शर्मा का. वैद्यकीय सेवा को भी सेवा का आदर्श रूप मानते हुए मरीजों को समुचित मार्गदर्शन करने के साथ ही गरीब महिलाओं की हरसंभव मदद को तत्पर रहती हैं.उल्लेखनीय सेवाओं के लिए तत्कालीन राज्यपाल से पुरस्कार प्राप्त करने के साथ ही अभी तक दो दर्जन से अधिक पुरस्कार प्राप्त किया है. विदर्भ स्वाभिमान परिवार की करोड़ों मंगलमय शुभकामनाएं. वे जितनी कामयाब डाक्टर हैं, उससे भी अधिक और मानवतावादी व्यक्ति हैं, जो आज के दौर में भी किसी की भी मदद के लिए सदैव तत्पर रहती हैं. रिश्तों को समझते हुए उसे निभाने की उनकी अदा बिरली है. यही कारण है कि आज न केवल अमरावती जिले बल्कि समूचे विदर्भ से विश्वास के कारण ही बड़ी संख्या में महिला मरीज उनके पास आती हैं.अभी तक कई पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. प्रांजल शर्मा स्त्री व प्रसूति संगठन की जिलाध्यक्ष चुनी गई हैं. इस पारी में भी संगठन को जनाभिमुख बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं. चुने जाने के बाद से सामाजिक उपक्रमों में भी योगदान देती हैं.सेवाभाव से वे जहां परिपूर्ण हैं, वहीं गरीब और जरूरतमंद महिला मरीजों की सदैव मदद के लिए तत्पर रहती हैं. वे भी मरीज सेवा को प्रभु की सेवा मानते हुए अपने स्तर पर सदैव बेहतरीन उपचार करने, मानसिक रूप से मरीज की हिम्मत बढ़ाने का काम करती हैं. कहते हैं कि किसी के प्रति आत्मीयता और प्रेम यूं ही नहीं पैदा होता है. अगर किसी के प्रति आपके मन में अपनों से बढ़कर सम्मान पैदा होता है तो जैसा कि शिवपुराण में कहा गया है कि अगर किसी के प्रति सम्मानजनक प्रेम पैदा हुआ है तो यह समझना कि किसी जन्म का नाता निश्चित ही रहा है. आज जहां स्वार्थ के इस दौर में अपने ही पराए हो जाते हैं, सीधे मुंह बात नहीं करते हैं, वहीं दूसरी ओर इस तरह का नहीं दिखाई देने वाला प्रेम निश्चित ही प्रभु की इच्छा के बगैर संभव नहीं है. दीदी जितनी बेहतरीन डाक्टर हैं, उतनी ही बेहतरीन समाजसेविका की भूमिका भी अदा करती हैं. वे कहती हैं कि समाज ने हमें बहुत कुछ दिया है तो हम जब वापसी के लायक हो जाएं तो समाज को देने का प्रयास करना चाहिए. आज वैद्यकीय क्षेत्र को लेकर कई बार सवाल उठाए जाते हैं. अस्पतालों पर हमले की घटनाएं होती हैं तो मन में कई सवाल पैदा होते हैं. लेकिन सेवा के चार दशक के दौरान दीदी के प्रति किसी को शिकायत नहीं होती है. इसके विपरीत उनके पास एक बार आने वाली महिला बार-बार उन्हें ही दिखाने का आग्रह अगर करती है तो निश्चित ही उन्हें गोविंदा का प्रसाद मिला है, यह कहना गलत नहीं होगा. जिला स्त्री रोग व प्रसूति संगठन की पदाधिकारी रहते समय बेटियों को बचाने के लिए जागरूकता की पहल में जिस तरह वे आगे आई और बेटी बचाओ का नारा देते हुए भव्य रैली निकालने की कल्पना की थी, उसकी सर्वत्र सराहना की गई थी. आज भी इस तरह के सामाजिक उपक्रमों में उनका सदैव बढ़-चढ़कर योगदान रहती है.मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि वे मेरी मानी हुई बहन हैं. मेरे हर सुख-दुख में उनका और डॉ. राजेश शर्मा का जिस तरह से आत्मीयता से साथ मिला है, वह कभी भुला ही नहीं सकते हैं. दीदी का 11 सितंबर को जन्मदिन है.प्रभु चरणों में यही कामना कि उन्हें सभी खुशियां मिलें, उनकी सभी चाहते और मनोरथ पूर्ण हो. जन्मदिन की करोड़ों शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान,अमरावती.

उल्लेखनीय सेवा के लिए दर्जनों पुरस्कार

डॉ. प्रांजल शर्मा जितनी बेहतरीन डाक्टर हैं, उससे भी कई गुना बेहतरीन व्यक्ति हैं, संवेदनशील रहने के कारण किसी के दर्द को नहीं देख पाती हैं. महिलाओं को बेहतरीन स्वास्थ्य रहने के लिए स्वयं पर ध्यान देना चाहिए. इतना ही नहीं तो घर के कामों के साथ ही स्वयं पर ध्यान देने की सलाह देती हैं. स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अभी तक राज्य सरकार के माध्यम से राज्यपाल के हाथों बेहतरीन सेवा का पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं. इसके अलावा समाजसेवी संगठनों तथा अन्यों द्वारा भी दर्जनों पुरस्कार उन्हें प्राप्त हो चुके हैं. वैद्यकीय सेवा के साथ ही महिलाओं के हितों तथा बेटी बचाओं के आंदोलन को उन्हों ने काफी गति प्रदान की है. संगटन की अध्यक्षा के रूप में भी बेहतरीन काम सदैव किया है.

जिस घर में माता-पिता हंसते हैं,भगवान वहीं पर बसते हैं

माता-पिता की उपेक्षा करने वाले घर में कभी शांति, सम्पन्नता नहीं रह सकती है. यदि रही भी तो आत्मिक सुकून बिल्कुल नहीं रहता है. आदर्श विचार जीवन में खुशी का केन्द्र रहते हैं. ऐसे में माता-पिता की सेवा के महत्व, उससे होने वाले चमत्कार, माता-पिता की सेवा नहीं करने के परिणाम को दिखाने का प्रयास इस किताब में किया गया है. बच्चों में बेहतरीन संस्कार के लिए यह जरूरी है.संस्कार का जीवन में कितना महत्व है, इस पर किताब में प्रकाश डाला गया है. प्राप्ती के लिए संपर्क करें. कीमत केवल 125 रूपए.

किताब खरीदने के लिए संपर्क करें मो. 9423426199/8855019189

हम सभी की चहेती, आदर्श महिला डाक्टर और सदैव सहयोग करने वाली

डॉ.प्रांजल राजेश शर्मा

को जन्मदिन 11 सितंबर पर हमारी मंगलमय

शर्मा चिल्ड्रेन्स एन्ड मैटर्निटी हास्पिटल के सभी कर्मचारी, विदर्भ स्वाभिमान परिवार, अमरावती.

धार्मिकता के साथ ही मंदिर द्वारा चलाया जाता है विभिन्न उपक्रम

अंबादेवी वाचनालय ने अभी तक कई छात्रों को दिलाई नौकरियां

महाप्रसाद का हजारों की संख्या में भक्त उठाते हैं पुण्यलाभ

देश के जागृत मंदिरों में है मां अंबा-एकवीरा देवी मंदिर

अमरावती जिले को धार्मिक जिले के रूप में पहचाना जाता है. हमारा शहर सबसे सुरक्षित, सभी सुविधाओं से लैस रहने के साथ ही यह अंबादेवी की कृपा मानी जाती है कि यहां न प्राकृतिक आपदा का खतरा कभी रहता है और न ही किसी तरह की समस्या ही रहती है. हमारे पड़ोस के जिलों में जहां जलसंकट है, लेकिन अंबानगरी तथा जिले में जल का विपुल भंडार है. अंबादेवी तथा एकवीरा देवी मंदिर जहां जागृत मंदिर हैं, वहीं दूसरी ओर जिले में अन्य भी कई मंदिर हैं, जिनका पौराणिक महत्व है. कोंडेश्वर महादेव मंदिर का इतिहास पांच हजार साल पुराना है. इतना ही नहींतो समूचे विश्व में मां अंबा तथा एकवीरा देवी को मानने वाले भक्तों की संख्या लाखों में है. अमरावती की भूमि पावन रहने के साथ ही यहां मंदिरों की श्रृंखला ही है और सभी मंदिरों से सेवाभाव का कार्य लगातार किया जाता है. भक्तिधाम में 35 साल से अन्नदान कार्यक्रम चल रहा है. वहीं जयस्तंभ चौक स्थित व्यंकटेशधाम भी भक्ती के साथ ही सेवा का माध्यम बना हुआ है. अंबादेवी-एकवीरा देवी मंदिर जागृत मंदिर के साथ ही यहां पर सालभर विभिन्न सेवाभावी उपक्रम भी चलते रहते हैं. यही कारण है कि इन मंदिरों की ख्याति देशभर में है. अंबादेवी मंदिर में महाप्रसाद के माध्यम से हजारों लोगों को लाभ मिलता है, वैसे ही एकवीरा देवी मंदिर के महाप्रसाद का लाखों भक्त लाभ लेते हैं. मंदिर के साथ ही अंबादेवी वाचनालय, मंगलवार को प्रसादी सहित अन्य विभिन्न कार्यक्रम होते रहते हैं. मंदिर में सुबह से लेकर रात तक रोज हजारों भक्त दर्शन का लाभ लेते हैं. मंदिर के साथ ही सेवाभाव के केन्द्र के रूप में इसकी ख्याति फैली है.

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की पत्रीका मां अंबादेवी के चरणों के लिए आने की बात साबित होती है. मंदिर संस्थान की अध्यक्षा तथा पूर्व महापौर श्रीमती विद्याताई देशपांडे के कुशल नेतृत्व में धर्म के साथ ही सामाजिक और गरीब छात्रों के लिए बेहतरीन उपक्रम लिया जाता है. अंबादेवी वाचनालय के माध्यम से सैकड़ों बच्चों को अभी तक नौकरी प्राप्त हुई है. इसके साथ ही मंगलवार को अल्प दर में बेहतरीन महाप्रसाद भक्तों के लिए वितरित किया जा रहा है. कुल मिलाकर अंबादेवी मंदिर धर्म के साथ ही सेवाभाव का केन्द्र बना हुआ है. मां अंबा की कृपा से आज तक अमरावती पर कोई संकट नहीं आने की बात कई भक्त बताते हैं. इतना ही नहीं तो मंदिर में नियमित दर्शन करने वाले भक्तों की संख्या भी लाखों में है. जो मां का दर्शन कर अपने जीवन में सफलता के साथ संतुष्टि प्राप्त करते हैं. मंदिर ट्रस्ट के सभी ट्रस्टी सेवा तथा भक्तिभाव से परिपूर्ण रहने से मंदिर का कामकाज पारदर्शी तरीके से चल रहा है और मां का आशिर्वाद समस्त भक्तों को मिल रहा है. मंदिर में साफ-सफाई से लेकर महाप्रसाद तथा स्वास्थ्य सेवा भी दी जाती है. अल्प शुल्क में मरीजों की स्वास्थ्य जांच के साथ ही उपचार अंबादेवी ट्रस्ट हास्पिटल से दिया जाता है. डॉ. जयंत पांढरीकर सहित अन्य इसमें सेवा दे रहे हैं. इसी तरह अंबादेवी के पास में ही स्थिति और देश में सुख्यात एकवीरा देवी मंदिर में दर्शन करने से मन तृप्त हो जाता है. लाखों भक्तों को मां एकवीरा देवी ने तारा है और यही कारण है कि मंदिर में रोज हजारों की संख्या में भक्त पहुंचकर दर्शन करने के साथ ही अपने जीवन की तमाम समस्याओं से मुक्ति पाते हैं. मंदिर के ट्रस्टी तथा कर्मचारी भी पूरी तरह से सेवासमर्पित रहने के कारण भक्तों का ध्यान रखा जाता है. मंदिर में सीसीटीवी के साथ ही अन्य इंतजाम भक्तों को सुविधा देने के साथ ही आत्मिक सुकून यहां पर मिलता है.

विदर्भ स्वाभिमान

कमाने का सुनहरा अवसर,विज्ञापन सहयोगी चाहिए

विदर्भ में तेजी से लोकप्रिय, आचार-विचार और संस्कारों को बढ़ावा देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को विज्ञापन सहयोगी की आवश्यकता है. बाजार पर पकड़ रखने वाले और आर्थिक मजबूती के साथ ही संभाषण कला में निपुण युवक-युवतियां संपर्क करें. काम के आधार पर मानधन और उनके द्वारा किए गए व्यवसाय पर कमीशन भी दिया जाएगा.

मेहनती तथा काम के प्रति जिद्दी युवक-युवतियां ही संपर्क करें.संपर्क का समय सुबह 10-12 बजे

मोबाइल 9423426199/8855019189

वार्ड संवाददाता चाहिए

अमरावती महानगर पालिका क्षेत्र में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है वार्डकी समस्याओं को प्रमुखता से उठाने का फैसला विदर्भ स्वाभिमान ने लिया है ऐसे में वार्ड स्तर पर संवाददाताओं की नियुक्ति करनी है समस्या की समझ के साथ ही समाजसेवा में रूचि रखने वाले युवा संपर्क कर सकते हैं. अपने क्षेत्र की समस्याएं आप भी जागरूक नागरिक के रूप में केवर प्रशासन तक पहुंचा सकते हैं. अपने क्षेत्र में मार्केटिंग के साथ ही विज्ञापन व्यवसाय के माध्यम से बेहतरीन कमाई भी कर सकते हैं. मेहनत करने की तैयारी वाले ही तत्काल संपर्क करें

संपर्क

छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती

मो. 9423426199/8855019189

विदर्भ स्वाभिमान

सदस्य बनें

विदर्भ स्वाभिमान संस्कारों का प्रोत्साहित करने वाला अखबार है. बच्चों के लिए यह ज्ञान का भंडार है. इसकी सदस्यता का अभियान चल रहा है. ऐसे में सदस्य बनने के इच्छुक संपर्क करें. मार्केटिंग करने तथा पेपर बांटने के लिए लड़के चाहिए.

संपर्क

छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती.

मो.9423426199

हजारों ने दी जन्मदिन पर शुभकामनाएं

अमरावती- शहर ही नहीं तो विदर्भस्तर के सुख्यात व्यवसायी, आनंद परिवार के सदस्य तथा सामाजिक कामों में सदैव अग्रणी रहने वाले प्रदीप रूणवाल के जन्मदिन पर हजारों लोगों ने उन्हें शुभकामनाएं दी. इतना ही नहीं तो सभी ने आनंद एजेंसीज में पहुंचकर उनका लेडी गवर्नर कमलताई गवई की उपस्थिति में सत्कार किया. हजारों लोगों ने मोबाइल, फोन के साथ ही वाटसअैप पर भी दिनभर प्रदीप जैन को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए सदैव स्वस्थ और मस्त रहने की कामना की.

मिलनसार स्वभाव के धनी प्रदीप जैन ने भी सभी को प्रेम को जीवन की सबसे बड़ी दौलत बताते हुए आत्मीयता से कृतज्ञता व्यक्त की. साथ ही कहा कि लोगों के इसी प्यार के कारण वे कुछ करने में समर्थ हैं. कामकाज में निपुणता के साथ ही प्रदीप जैन का स्वभाव विनम्र रहने से उन्हों ने हजारों मित्र तैयार किए हैं. इसका नजारा उनके जन्मदिन के दिन दिखाई दिया. डॉ. गोविंद कासट मित्र मंडल के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों के मान्यवरों ने उन्हें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की.

व्यवासीय परिवार के संचालक, भारतीय जैन संगठन के वरिष्ठ जिला पदाधिकारी प्रदीप जैन के जन्मदिन पर हजारों मित्रों ने उन्हें शुभकामनाएं दी. सभी की शुभकामनाओं का स्वीकार करने के साथ ही उन्हों ने सभी के प्रति व्यक्तिगत रूप से कृतज्ञता व्यक्ति की. उनके मुताबिक लोगों का यही प्यार उन्हें सेवाभाव के कार्यों के लिए प्रेरित करता है. उल्लेखनीय है कि सुबह से लेकर रात तक प्रदीप जैन को मोबाइल, फोन, वाटसअॅप, फेसबुक के साथ ही फोन कर शुभकामनाएं दी गई. उन्हों ने भी सभीकी शुभकामनाओं का स्वीकार करते हुए इसे ही अपनी ताकत बताया.

जन्मदिन पर लोगों द्वारा दी गई शुभकामनाओं, आत्मीयता से भावविभोर हुए प्रदीप जैन ने सभी के प्रति कृतज्ञता जताई. साथ ही कहा कि वे लोगों के इस प्यार के सदैव ऋणी रहेंगे. उनके मुताबिक अच्छा करते रहो तो सदैव अच्छा ही होने की सीख उन्हें मिली है. सुबह से लेकर रात तक जन्मदिन शुभकामनाएं देने वालों का सिलसिला शुरू था, सभी के प्रति कृतज्ञता उन्हों ने जताई.

शुभेच्छुक
पंकज मुदगल व परिवार
व्यवस्थापकीय अधीक्षक, डॉ. नरेन्द्र भिवापुरकर अंध कर्मशाळा, जेल क्वार्टर रोड, अमरावती.

शुभेच्छुक
सुधीर महाजन तथा परिवार
प्राचार्य,पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल,कठोरा नाका, अमरावती.

आदर्श शिक्षकों के कारण ही आज यह सफलता मिली

शिक्षक दिन पर पंकज मुद्गल की राय

अमरावती - गुरूजनों की भारतीय संस्कृति में महत्ता सर्वाधिक है. माता-पिता के बाद सर्वाधिक सम्मान और आदर अगर किसी को दिया जाता है तो वह शिक्षकों को ही दिया जाता है. शिक्षक ही देश के भाग्यविधाता होते हैं. बच्चों को पढ़ाने के साथ ही आदर्श संस्कार देने का काम शिक्षक ही करते हैं. इसलिए गुरूजनों का सदैव सम्मान करना चाहिए.इस आशय का आग्रह दिव्यांग सेवा में स्वयं को समर्पित करने वाले डॉ. नरेन्द्र भिवापुरकर अंध कर्मशाळा के प्रबंधकीय अधीक्षक पंकज मुद्गल ने किया. भारतीय संस्कृति में गुरू की तुलना देवताओं से भी अधिक महत्वपूर्ण रूप में की गई है. गुरूजनों को इसकी गरिमा का ख्याल रखने के साथ ही बेहतरीन पीढ़ी के निर्माण के लिए प्रयास करना चाहिए. शिक्षकों का देश के विकास से लेकर तरक्की और जागरूकनागरिक तैयार करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहता है. ऐसे में उन्हें गंभीरता से लेने के साथ ही गुरूजनों का सर्वत्र सम्मान किया जाना चाहिए. उन्हें भी इसकी गरिमा का सदैव ख्याल रखते हुए काम करना चाहिए.पंकज मुद्गल ने गणेशोत्सव के उपलक्ष्य में भी सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी.

मेरी मां थी मेरी आदर्श शिक्षक,संघर्ष से लड़ना सिखाया

विनम्र आदरांजलि : सौ. सुमनताई कैथवास, मददगार व आत्मीयता से ओतप्रोत थी

मेरे जीवन में मेरी और मेरी परिवार की आदर्श गुरू मेरी मां थी, जिन्होंने संघर्ष से जूझने के साथ ही स्वयं किस तरह आगे बढ़ने के साथ ही समाज के लिए कार्य करना चाहिए, यह सिखाया, आज वह नहीं हैं लेकिन उनकी हर सीख पर चलते हुए कैथवास परिवार लगातार आगे बढ़ रहा है. गरीबी से जूझते हुए उन्होंने जहां परिवार को संभाला वहीं बेटे तथा बेटी को बेहतरीन शिक्षा दिलाते हुए आज कामयाबी की बुलंदी पर पहुंचाया. यह मां का ही आशिर्वाद है कि आज कैथवास परिवार उच्च शिक्षा के साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र में भी अपनी स्वयं की पहचान रखता है. उनकी जयंती पर उन्हें विनम्र आदरांजलि. उनके विचारों पर सदैव चलते हुए उनके कार्यों को पूरा करने का प्रयास सदैव करने का वचन देते हैं. मां को विनम्र आदरांजलि. भगवान उनकी दिव्य आत्मा को शांति प्रदान कर यही कामना. जिस तरह सोना तपने के बाद निखरता है, वैसे ही कुछ लोग जीवन में तपिश के बाद ही निखरते हैं. ऐसे ही लोगों में शामिल थी सुख्यात समाजसेविका सौ. सुमनताई कैथवास. जीवन में संघर्ष के माध्यम से उन्हों ने जहां अपना मुकाम बनाया, वहीं परिवार को संवारने में पूरा जीवन लगा दिया. यद्यपि सुख के दिनों में इसका उपयोग उनके नसीब में नहीं रहा लेकिन संघर्षशील महिला के रूप में उन्हों ने हजारों महिलाओं को प्रेरणा देने का काम किया. शारदा महिला बचत समूह के माध्यम से अनगिनत महिलाओं के जीवन में स्वाभिमान जगाया और उन्हें आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी. उनकी दूसरी जयंती पर विदर्भ स्वाभिमान की विनम्र आदरांजलि. आज उनकी तपस्या का ही फल है कि कैथवास परिवार सम्मानित परिवार के साथ ही उच्च शिक्षित परिवार के रूप में गिना जाता है. दोनों बेटों के साथ ही बेटी को भी उच्च शिक्षा दिलाते हुए

अपने पैरों पर खड़ा किया. कहते हैं कि जो आया है, उसे एक न एक दिन जाना होता है. लेकिन इसदौरान हमारी नेकी और किये गये काम सदैव याद किए जाते हैं. कुछ इसी तरह की महिला थी सौ. सुमनताई कैथवास. 5 सितंबर को उनकी जन्मतिथि है. कोरोना महामारी ने उन्हें भले ही छीन लिया, लेकिन उनके कामों की आज भी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है. लायक बेटे-बेटी द्वारा मां कोजहां याद किया जाता है, वहीं दूसरी ओर उन्हें आदरांजलि देने के साथ ही उनके आदर्श विचारों पर ही परिवार चल रहा है. दोनों बेटों में से निलेश कैथवास ने स्वयं की चिंचवड़ पुणे में कंपनी खोलकर मां के सपनों को जहां साकार किया है, वहीं मुंबई निवासी बेटी जया बौरासी भी उच्च पद पर आसीन रहकर कैथवास परिवार का नाम रोशन कर रही है. इसका पूरा श्रेय वे माता की तपस्या को देते हैं. उनके मुताबिक जिंदगी में कोई अमर नहीं है. जो आया है, उसे जाना ही है. लेकिन उनकी मां ने जिस तरह से संघर्षों से जूझते हुए परिवार को संभाला, लायक बनाया, वह सभी के लिए आदर्श से कम नहीं है. सौ. सुमनताई का स्वभाव, संघर्ष करने की ताकत के साथ ही हर बात को गंभीरता से समझना, गरीबों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहने जैसी खूबी ने उन्हें महान बना दिया था. हजारों लोगों की टीम बनाई थी. समाज के लिए बहुत कुछ करने का माद्दा रखती थी. प्रभु उनकी दिव्य आत्मा को शांति प्रदान करें, उनके चरणों में यही कामना. उन्हें विनम्र आदरांजलि और नमन.

निलेश कैथवास बेटा
जया बौरासी, बेटी

प्रोप्रा.: गौरव पुसदकर Mo..7756056429 9604781766
पुसदकर टुर्स अॅन्ड ट्रॅव्हल्स्
१५, ३५, ४५, ४९, बस व क्रुझर, ईनोव्हा, ईर्टिगा, इंडिका एसी व नॉन एसी गाडी योग्य दरात भाड्याने मिळतील.
डेली सर्व्हिस पुणे, मुंबई, बेंगलोर, हैद्राबाद

अनुपम
ड्रेस मटेरियल्स
सलवार सुट्स
कुर्ती लेगिन्स
घाघरा चुन्नी
किड्स वेअर
नमुना नं.१, राजकमल चौक, अमरावती. ०७२१-२५७०१२९

जयस्तंभ चौक, अमरावती. फोन. २५७२६७२, २५६४१७२

संजय विजयकर (सुख्यात समाजसेवी तथा व्यवसायी), संचालक बंडू बेल्ट वाले, सरोज चौक रोड, अमरावती.

विनम्रता,संवेदनशीलता है जिनकी विशेषता

एड. विनोद लखोटिया के पास हैं हजारों अनमोल मित्र

समय के साथ मित्रता की परिभाषा भी बदलती है. लेकिन आज भी कुछ लोग अपने बेहतरीन मित्रों को अपनी सबसे बड़ी दौलत और ताकत मानते हैं. ऐसे ही लोगों में शामिल हैं सुख्यात अधिवक्ता एड. विनोद लखोटिया. मिलनसार, संवेदनशील रहने के साथ ही किसी की भी मदद के लिए सदैव सकारात्मक रहते हैं. 31 अगस्त को उनका जन्मदिन है. हजारों मित्रों ने उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं दी. यह सिलसिला सुबह से लेकर रात तक चलता रहा. इसे जीवन में वे अपनी सबसे बड़ी कमाई मानते हैं. साथ ही कहते हैं कि जिंदगी में माता-पिता का आशिर्वाद और मित्रों के साथ ने उन्हें सदैव बहुत कुछ दिया. वे पूरी तरहसे संतुष्ट हैं और हजारों अनमोल मित्रों का शुक्रिया अदा करना नहीं भूलते हैं. खुशमिजाज व्यक्तित्व के साथ ही सेवाभाव उनमें रहता है. दिखने में वे धीर-गंभीर दिखाई देने के कारण उनके व्यक्तित्व को समझना मुश्किल होता है. लेकिन वे आत्मीयता तथा अपनेपन के सागर हैं. हमारी भी शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान

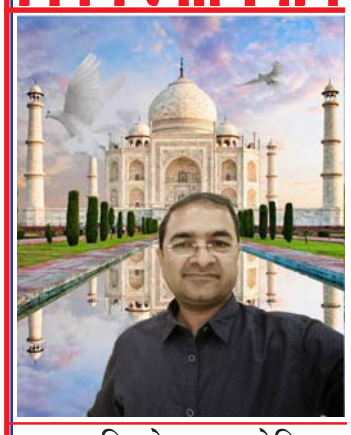

एड.विनोद लखोटिया

ज़ीवन में खुशियां,दुःख और अन्य घटनाक्रम नसीब का भाग होते हैं. वह भगवान राम, भगवान कृष्ण को जब नहीं चूका तो सामान्य इंसान को कैसे चूक सकता है. इसलिए सदैव आज में जीने और अपने सानिध्य के साथ ही साथ आने वालों को खुशियां बांटने का प्रयास करना चाहिए. मानवता की सेवा सबसे बड़ी सेवा है. किसी रोते हुए के चेहरे पर खुशियां लाना भगवान की सबसे बड़ी पूजा है. ऐसा करने वाले को कभी भगवान नाराज नहीं होने देते हैं.यह विचार रखते हैं शहर ही नहीं तो विदर्भ स्तर के सुख्यात अधिवक्ता और यारों के दिलदार यार एड. विनोद लखोटिया. यद्यपि वकील साहब दिखने में धीर-गंभीर दिखाई देते हैं लेकिन जिसे चाहते हैं, दिल से चाहते हैं और उसके लिए सदैव प्रयास करने से नहीं चूकते हैं. उनके इसी स्वभाव के कारण हजारों मित्र परिवार उन्हों ने बनाएं हैं. उनकी यह खूबी है कि मिठास वाले शब्दों तथा अपनी विनम्रता से किसी पर भी छा जाते हैं. उनके जन्मदिन 31 अगस्तको हजारों ने उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं दी.

माता-पिता के आदर्श संस्कार जहां उनके रग-रग में रहते हैं, वहीं जानी-मानी हस्ती रहने के बाद भी उनकी विनम्रता किसी को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रहती है. शहर ही नहीं तो तो विदर्भस्तर पर सुख्यात अधिवक्ता विनोद लखोटिया जितने बेहतरीन वकील हैं, उतने ही हंसमुख, किसी भी कानूनी पहलू का बारीक से अध्ययन करने वाले इंसान है. मानवता सेवी रहने के साथ ही माता-पिता को जीवन में अत्याधिक महत्व देते हैं. अधिवक्ता विनोद लखोटिया खुशमिजाज व्यक्तित्व के साथ ही यारों के अजीज यार के रूप में पहचाने जाते हैं. उनके मुताबिक मानवता की सेवा भी सबसे बड़ा पुण्य का काम है. उनसे इस मामले में जितना संभव होता है, करने का प्रयास करते हैं.सुख्यात वकील रहने के बाद भी वे अहंकार से कोसों दूर रहते हैं. यही कारण है कि हजारों मित्र परिवार उन्होंनजोड़ा है.वे बातचीत में कहते हैं कि हर व्यक्ति को सामाजिक दायित्व की भावना से नेक कामों में यथासंभव सहयोग देना चाहिए. समूचे विश्व को कोरोना महामारी ने यह बता दिया कि धन दौलत नहीं बल्कि किए गए नेक काम ही व्यक्ति को महान बनाते हैं. सुबह से लेकर शाम तक उनकी दिनचर्या सर्वाधिक व्यस्त रहती है. इसके बाद भी चेहरे पर थकान नहीं दिखाई देती है. सदैव हंसमुख रहते हैं और सभी को सदैव प्रसन्न रहने की सीख देते हैं. जीवन में धन-दौलत सब यहां की जरूरत है. लेकिन किया गया काम सदैव याद रखा जाता है. यही कारण है कि जितना बन सके, नेक काम करते रहना चाहिए.

सम्पन्नता में भी विनम्रता की प्रतिमूर्ति अधिवक्ता विनोद लखोटिया आत्मीयता तथा अपने पन के सागर हैं.जहां वे मानवता की सेवा में समुचित योगदान देते हैं, वहीं दूसरी ओर नेक कामों में योगदान देते हैं.बड़ों को सम्मान और छोटों को प्यार देने की उनकी खूबी की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है. पिछले सात साल के दौरान विदर्भ स्वाभिमान ने स्वयं इसका अनुभव किया है.सफलतम वकील रहने के बाद भी उनके व्यक्तित्व की सादगी किसी को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रहती है. संस्कारों का जीवन में अत्याधिक महत्व बताने वाले अधिवक्ता विनोद लखोटिया कहते हैं कि हमारे बुर्जुगों द्वारा लगाई गई व्यवस्था कई मायने में अत्याधिक पॉवरफुल रहती है. वे कहते हैं कि जब हम अपनों को सम्मान नहीं दे सकते हैं तो दुनिया में अन्य किसे देंगे. इसलिए घर के बड़े-बुजुर्गों को सम्मान देने से ही हमें भविष्य में सम्मान मिलेगा. कार से भी अधिक जरूरत आज संस्कारों की रहने की बात वे कहते हैं.

मानवता के साथ ही बुजुर्गों, दिव्यांगों की सेवा को पुण्य काम बताते हैं. अधिवक्ता के साथ ही सामाजिक कार्यों में भी जब भी समय मिलता है, योगदान देने में सदैव अग्रणी रहते हैं.दिव्यांगों के साथ ही गरीबों, जरूरतमंदों के साथ ही बुजुर्गों की मदद में आगे बढ़कर प्रयास किया था. सादगी से परिपूर्ण अधिवक्ता विनोद

शुभेच्छुक - एड. लखोटिया मित्र परिवार,कर्मचारी, विदर्भ स्वाभिमान परिवार,अमरावती.

विघ्नहर्ता की आराधना में डूबेगी अंबानगरी

शहर तथा जिले में 1200 से अधिक गणेश मंडलों द्वारा गणेशजी की स्थापना की जाती है. कई मंडल तो राज्यस्तर पर पहचान रखते हैं.

प्रतिनिधि, 4 सितंबर

अमरावती - अंबानगरी के साथ ही समूचे जिले में विघ्नहर्ता का 7 सितंबर को आगमन हो रहा है. इसको लेकर गणेश भक्तों में अपार हर्ष व्याप्त है. गणेशोत्सव को लेकर जहां कार्यकारिणी की घोषणा होकर पावती के माध्यम से वित्तीय ताकत जुटाने का प्रयास शुरू कर रहे हैं, वहीं बच्चों से लेकर युवाओं में गणेशोत्सव को लेकर जबर्दस्त उत्साह देखा जा रहा है. गणेशोत्सव के दौरान भारतीय संस्कृति की गरिमा के साथ ही आदर्श संस्कृति का ध्यान रखना चाहिए. ऐसे में सभी मंडलों को चाहिए कि वे मंडप की पवित्रता को बरकरार रखने के साथ ही इस तरह की कोई भी हरकत नहीं करें, जिससे सनातन धर्म की महत्ता पर सवाल उठाने का मौका लोगों को मिले. इसके साथ ही शांति और सुव्यवस्था में पुलिस की मदद करने के साथ ही आदर्श सामाजिक, प्रबोधनात्मक पहल के माध्यम से मंडल को पुरस्कार दिलाने के साथ ही यह भी प्रयास करें कि मंडप लोगों के लिए किस तरह से अनुकरणीय बन सकता है.

देश की आजादी के अमृत महोत्सवी वर्ष क़े साथ ही गणेशोत्सव की दोहरी खुशियों से पूरा देश झूम रहा है. उत्साह के साथ ही गणेशोत्सव के दौरान देवत्व की पवित्रता के साथ ही युवाओं को बने तक इस तरह की कोई भी हरकत नहीं करनी चाहिए, जिससे हमें ही शर्मिंदगी वाली नौबत से आगे बढ़ना पड़े. विघ्नहर्ता की सेवा के साथ ही युवा पीढ़ी को यह संकल्प लेना चाहिए कि रिद्धि-सिद्धि के साथ ही बुद्धि प्रदाता भगवान गणेश उनके जीवन में खुशियां लाएं और जिस तरह से समाज के लिए सभी की जिम्मेदारी है, उसी तरह सभी को अपनी भूमिका निभानी चाहिए. हर देशवासी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम हमारे देश की गरिमा, गौरव, गणेशोत्सव की पवित्रता को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास करेंगे.जो व्यक्ति जिस भी क्षेत्र में है, अपने क्षेत्र में अगर समर्पण के साथ ईमानदारी से कार्य करे तो यह भी देश के लिए कम महत्वपूर्ण नहीं है. युवाओं से इस दौरान व्यसनों से मुक्त रहने के साथ ही अन्यों को भी प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए. जब सभी अपनी जिम्मेदारी सही तरीके से निभाने लगें गे तो निश्चित ही समस्या का हल वैसे ही हो जाएगा.

गणेशोत्सव केवल पर्व नहीं बल्कि आदर्श आचार-विचार और संस्कारों का माध्यम है. इस दौरान ऐसी कोई हरकत भूल से भी नहीं होनी चाहिए, जिससे किसी को उंगली उठाने का मौका मिले. कई युवाओं द्वारा इस दौरान मंडप के सामने गलत तरीके से नाचने, धूम मचाने वाली स्थिति से हमारा ही महत्व कम होता है.गणेशोत्सव सनातन धर्म को जोड़ने का माध्यम भी है. ऐसे में सभी का परम दायित्व बनता है कि इस पर्व को खुशियों के साथ सेवा का भी माध्यम बनाने का प्रयास करना चाहिए.

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक,

सन 1967 पासून

अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट

संजय एजंसीज्

टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.
फोन 2564125,2674048

राजपुरोहित डिजिटल स्टुडियो

शादी-ब्याह का रंग, हमारे संग

आधुनिकतम साज-सज्जा के साथ ही रियायती कीमत में बेहतरीन गुणवत्ता क़ी विडियो शूटिंग के लिए शहर ही नहीं तो समूचे विदर्भ में एकमात्र विश्वसनीय केन्द्र.फोटोग्राफी, विडियो शूटिंग के साथ अलबम के काम किए जाते हैं.

राजपुरोहित फोटो स्टुडियो

कृष्णार्पण कॉलोनी, संत लहानुजी महाराज मंदिर के पास,अमरावती.अमरावती.
मो.9028123251

विदर्भ स्वाभिमान
मानव सेवा,माता-पिता सेवा को प्रोत्साहित करने वाला समाचार पत्र

घर की छत पर पक्षियों के लिए दाना-पानी की सुविधा करें. भीषण गर्मी में उन्हें हमारी सर्वाधिक जरूरत है. सृष्टि हित में विदर्भ स्वाभिमान की विनम्र प्रार्थना है. इस माध्यम से पुण्य कमाने का सुअवसर मिल रहा है.